हिन्दी विभाग
स्नातकोत्तर द्वितीय सत्रार्द्ध
पत्र संख्या :- 06

घनानन्द की प्रेम व्यंजना

रीतिमुक्त स्वच्छन्द काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि घनानन्द महान प्रेमी थे। 'सुजान' से प्रेम करने वाले घनानन्द की सम्पूर्ण काव्य साधना प्रेमोद्गारों की अक्षय निधि है। इनकी प्रेम पद्धति वियोग व्यथा से ओतप्रोत है; वैयक्तिकता से जुड़ी हुई है और उसमें अलौकिकता, नवीनता, मार्मिकता, कष्ट सहिष्णुता जैसे गुण विद्यमान हैं। उनकी कविता में प्रेम का सरल, सहज एवं स्वच्छन्द रूप दिखाई पड़ता है जिसमें उदात्तता विद्यमान है। घनानन्द प्रेम की पीर के कवि हैं। प्रेम विभोर हृदय की कोई ऐसी वृत्ति नहीं है जिसका चित्रण घनानन्द ने न किया हो। इसलिए आचार्य शुक्ल ने लिखा- "प्रेम की गूढ़ अन्तर्दशा का उद्घाटन जैसा इनमें है, वैसा हिन्दी के किसी अन्य शृंगारी कवि में नहीं।"

घनानन्द का प्रेम विशुद्ध लौकिक था। वे मुहम्मदशाह रंगीले के दरबार में रहने वाली सुजान नामक वेश्या से प्रेम करते थे, किन्तु उसके छलकपट पूर्ण व्यवहार से वे भीतर से व्यथित हो गए।

उनका हृदय 'चाह के रंग' में भीगा था। प्रिय भले ही निष्ठुर एवं निर्मम हो, किन्तु घनानन्द एक निष्ठ एवं अनन्य प्रेमी हैं। भले ही प्रिय ने उनके साथ विश्वासघात किया, किन्तु वे जीवन-पर्यन्त सुजान से प्रेम करते रहे। उनकी धारणा थी कि प्रेममार्ग तो सरल, सीधा, निश्छल होता है जहाँ चतुराई और कपट के लिए भी स्थान नहीं है:

अति सूधो सनेह को मारग है, जहं नेकु सयानप बांकु नहीं।
तहां सांचे चलैं तजि आपुनपौ झिझकैं कपटी जे निसांक नहीं॥

घनानन्द के प्रेम का मूल आधार तो 'सौन्दर्य' ही है। उनकी प्रेयसी सुजान अनिंद्य सुन्दरी थी। उसका सौन्दर्य घनानन्द के रोम-रोम में बसा है। स्थान-स्थान पर वे उसके इस सौन्दर्य का चित्रण बड़े मनोयोग से करते हैं:

रावरे रूप की रीति अनूप नयो-नयो लागत ज्यों ज्यों निहारिए।
त्यों इन आँखिन बानि अनोखी अघानि कहूं नहिं आन तिहारिए॥

घनानन्द के प्रेम में कष्ट सहिष्णुता का गुण विद्यमान है। वे हर प्रकार का कष्ट सहन करने को तैयार हैं। उनका एक मात्र उद्देश्य है कि वह अपने कष्टमय जीवन को दिखाकर प्रिय के निष्ठुर हृदय में दया उत्पन्न करे:

ऐसे घन आनन्द गही है टेक मन मांहि,
ए रे निरदई तोहि दया उपजाय हौं॥

घनानन्द विरही थे। उनके हृदय में विरह का अथाह सागर हिलोरें ले रहा था। उनके विरह में बाहरी उद्‌गल कूद, शारीरिक ताप की अधिकता या विरहजन्य कृशता का उल्लेख नहीं अपितु उसमें हृदय की तड़प, वेदना की अतिशयता एवं विरहाकुलता है।

घनानन्द का प्रेम यद्यपि लौकिक है उसमें कहीं-कहीं अलौकिकता की झलक भी मिलती है:-

पाऊँ कहाँ हरि हाय तुम्हें धरती में धसौं कै अकासहिं चीरौं

हे प्रभु तुम्हे कहाँ खोजूं, क्या इसके लिए मैं धरती को फाड़कर उसमें धसूं या आकाश को चीर डालूं?

प्रस्तुतकर्ता

बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण कॉलेज हाजीपुर
मो०नं०-8292271041

दिनांक
1/12/2020